सं. भी.वि./33183.—चूंकि हरियाणा के याज्यपाल की राय है कि मैं. हरियाणा कोपरेटिव शूगर मिल लि., रोहतक के अमिक श्री ईश्वर दास तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है; श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की त्यावनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भौदोगिक विवाद अभिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अम-78/32573, दिनोक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उनत अबन्धकों तथा अभिक के बोन्या तो विवादमस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :---

क्या श्री ईश्वर दास की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित्र तया ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहस का हकदार है ? 📑 🤏

सं श्रोशिवः/33190 --वृक्ति हरियाणा के राज्यमान की राय है कि मैं इरियाणा कोपरेटिव शूगर मिल लि., रोइनिक के श्रीमिक श्री धर्मभीर सिंह तथा उनके प्रबद्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीष्टीगिक विवाद है:

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चोछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भव, भौबोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सर्कारी भिक्षसूचना सं० 9641-1-श्रम/78/35273, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी भिक्षसूचना को घारा 7 के भक्षीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नी वे लिखा मामना न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो निवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री अर्म वीर सिंह की सेवांभों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का द्वकदार है ?

सं भी.वि./33197.—चूंकि द्वरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. हरियाणा कोपरेटिव शूगर मिल लि., रोइतक के श्रीतक श्री रोद्वतास सिंह तथा उसके श्रवत्वकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीवोगिक विवाद है; भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं;

इसिलिये, श्रव, भौद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का श्रयोग करते हुवे हरियाणा के राज्यताल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्चना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिविस्चना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगद या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उसते विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री की रोहतास सिंह सेत्रामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

क सं श्रो.वि./एफ.डी./25-85/33913.--चूकि हरियाणा के राज्यशाल की राय है कि मैं. श्रारव्के की प्रारमा प्राव सिंव, 12, माईल स्टोन मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्रीमती चन्द्र कान्ता तथा उसके प्रबुन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित सामने मैं कोई भौधोगिक विवाद है,;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणंय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, भव, भीबोगिक विवाद प्रधितियम, 1947 की धारा 10 की छपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिन्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये प्रधिसूचना सं. 1:1495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा छक्त भिध्सूचना को बारा 7 के भधीन गठित अन न्यायाल र फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद भी सुसंगत ग्रमवा संबंधित मामला है :---

म्या श्रीमति चन्त्र कान्ता की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है?